REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2024

नारी के बदलते सामाजिक संदर्भों को आत्मसात करता : ''अकेला पलाश''

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.
श्री वी. एम. महेता म्युनि. आर्टस एवं कॉमर्स कॉलेज जामनगर (गुजरात)

मानव जीवन के अनेकविध पहलू उजागर करने वाला एक सशक्त साधन और साहित्य की अत्यधिक लोकप्रिय विधा है–उपन्यास। उपन्यास विधा में समाज का प्रतिबिंब अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह से पडता है इसी कारण कहा जाता है कि इतिहास में नाम और काल ही सत्य है। परंतु असली चिरंतन सत्य के दर्शन तो साहित्य में खासकर उपन्यास में होते है। । इस संदर्भ में श्री त्रिभुवनसिहं लिखते है। साहित्य क्षेत्र में उपन्यास ही एक ऐसा उपकरण है जिसके द्वारा सामूहिक मानव–जीवन अपनी समस्त भावनाओं एवं चिंताओं के साथ संपूर्ण रूप में अभिव्यक्त हो सकता है। मानव–जीवन के विविध चित्रों को चित्रित करने का जितना अधिक अवकाश उपन्यासों में मिलता है उतना अन्य साहित्यिक उपकरणों में नही।

उपन्यास विधा को अनेक साहित्यकारों ने बड़ा योगदान दिया है। उसके मार्ग को अपने अपने ढगं से प्रशस्त किया है। उपन्यास एक ऐसी लचीली साहित्यिक विधा है जिसमें मानव–जीवन की अनुभूतियों और जटिल भावनाओं को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है । उपन्यास आधुनिक साहित्य का समृद्ध और विकसित रूप है उपन्यास जीवन का चित्र होता है, अतएव इसके क्षेत्र का विस्तार भी जीवन की ही तरह व्यापक और विशाल होता है। प्राचीन युग से ही साहित्य के क्षेत्र में नारी पुरुष का साथ देती है। आज साहित्य की सभी विधाओं में महिला लेखिकायें अपना योग दान दे रही हैं। उपन्यास के क्षेत्र में महिला कथाकारों का योगदान और अप्रतिम है। इनमें सामाजिक जीवन के अनेक स्तर उदघाटित हुए हैं। इनके उपन्यासों में युगीन सामाजिक, राजनीतिक जीवन मूल्यों और मान्यताओं की पृष्ठभूमि में वैयक्तिक जीवन का भी बड़ा संवेदनशील व आत्मीय चित्रण हुआ है। परिवार और उसके भी विघटन की पृष्ठभूमि में सहज मानव आचरण व उसकी विडंबना को दर्शाया गया है।

महिला उपन्यास लेखिकाओं ने अपनी कृतियों में जहां एक ओर सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा की है वहीं दूसरी ओर रुढियों का बहिष्कार भी किया है। प्रेम–विवाह, दांपत्य–जीवन आदि के उत्कृष्ट चित्रण के साथ ही इन लेखिकाओं ने आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में समाज को देखा और परखा है। श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज का लेखन जीवन की समग्रता का प्रस्तुतीकरण लेकर सामने आता है। सामाजिक व्यवस्था का अभिशाप और इस यातना से मुक्ति की छटपटाहट ही इनके लेखक का आधार है। श्रीमती परवेज ने अपने व्यापक अनुभव को ही अपनी रचना का आधार बनाया है।

श्रीमती परवजे ने कुल छह उपन्यास लिखे हैं। आखों की दहलीज, उसका घर, कोरजा, अकेला पलाश, पासंग और समरांगण है। मेहरून्निसा परवेज कृत अकेला पलाश उपन्यास 1981 में वाणी प्रकाशन कमलानगर, दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ है। (प्रथम संस्करण) प्रस्ततु उपन्यास के संदर्भ में डॉ. शीलप्रभा वर्मा लिखती है,

श्रीमती मेहरून्निसा परवेज का लेखन जीवन की समग्रता का प्रस्तुतीकरण लेकर सामने आता है। आंखों की दहलीज, उसका घर, कोरजा एवं अकेला पलाश उनके प्रमुख उपन्यास है। श्रीमती परवेज के कथ्य में एक पुरुष दो नारी अथवा एक नारी दो पुरुष के त्रिकोण बार–बार आवर्त की तरह घूमते रहते हैं। बेमले विवाह से उपजी नारी की दैहिक वासना की समस्या को लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से उजागर किया है।

तहमीना का विवाह जमशेद नामक ऐसे व्यक्ति से होता है जो उम्र में उसके पिता के समान रहता है। यही तहमीना की सारी स्त्री–सुलभ आकांक्षाओं पर कुठाराघात होता है। तहमीना एक ऑफिस में बड़े पद पर काम करनेवाली कामकाजी नारी है। उसकी भेट तुषार नामक युवक से होती है और वह अपने आप को समर्पित कर देती है। यहां लेखिका नारी के सेक्स की भूख को बहुत महत्व देती है और वह उसे दमन तथा संयम के ढांगे को नकारती है। इसके अलावा लेखिका ने अंतर्जातीय विवाह, कामकाजी नारी की समस्याएं, सरकारी दफ्तरों में पनपनेवाला भ्रष्टाचार, आश्रम में स्वामी लोगों द्वारा नारी का यौनै शोषण, सरकारी अस्पताल की हालत आदि समस्याओं को उसने

अपने उपन्यास के माध्यम से उजागर किया है। तहमीना नौकरी करनेवाली कामकाजी नारी है। उसका बचपन बड़े–ही तंग हाली में गुजरा था। उसके मां और पिता में हंमेशा झगड़े हुआ करते थे । उसके पिता नंबर एक के पियक्कड़ और ऐय्याश किस्म के व्यक्ति थे। सारा पैसा वे अपनी ऐय्याशी पर पीटते थे और कडक़ड़ाती ठंड में उसे घर से बाहर कर देते थे। तहमीना के घर उसके पिता के एक दोस्त अक्सर आया करते थे। यह व्यक्ति उसके मां के पास बैठ कर घंटों बातें करता था। तब तहमीना की आयु मुश्किल से पन्द्रह वर्ष की रही, होगी, उसके जीवन में एक भयंकर भूचाल आता है। एक रात अचानक उसके कमरे में उसके पिता का यह दोस्त आता है और उसे दबोच लेता है। तहमीना उस समय सिर्फ कांप कर रह जाती है। यहां लेखिका ने इस घटना का बड़ा ही यथार्थ चित्रण किया है। यौवन की किताब का पहला पाठ उसने इतनी कम उम्र में पढ़ लिया। यह सब कैसे हुआ, किसी इच्छा से हुआ वह समझ नहीं पायी, और आज भी यह बात उसके लिए पहेली की तरह है। नियमित रूप से यह घटना हर शाम घर में घटने लगी। यह अचानक हुई गड़मड़ बातें उसके दिमाग में स्थिर नहीं हो पा रही थी। वह व्यक्ति जो उसके पिता की उम्र का था तथा जिसे उसने कभी शक्ल–सूरत से भी पसदं नहीं किया था उसी ने उसके कमरे में, उसके अपने घर में, मां की मौजूदगी में लूट लिया। तहमीना के पिता अक्सर बाहर रहते थे। एक दिन तहमीना की मां पिता के सामने कर देती है और उन्हें उसका ब्याह उनके दोस्त से करने के लिए मजबूर कर देती है।

उसकी मां को यह भय था कि कहीं तहमीना उसके बाप की हवस का शिकार ना हो जाय। इसलिए उसने तहमीना की शादी जमशेद जैसे बूढ़े से कर दी थी। तहमीना के मां ने इस तरह अपनी बेटी की आहुति देकर, अपने पति से बदला लिया था। तहमीना ने एक बार जो अपना मायका छोड़ा तो फिर वह कभी मायके नहीं आयी। पति–पत्नी के बीच उम्र का इतना बड़ा फासला किस तरह तहमीना को तोड़कर रख देता है इसका वर्णन भी लेखिका ने विस्तार से किया है। एक दिन तहमीना साफ शब्दों में अपने पति जमशदे से कहती है देखो, तुम मरे शरीर के साथ को खिलवाड़ करते हो, मेरे शरीर की इच्छाओं को जगा देते हो और उन इच्छाओं की मांग को पूरा नहीं कर सकते, तब तुम मेरे पास आते क्यों हो ? इससे तो अच्छा है तुम मेरे पास आया ही ना करो। मैं तुम्हारी पत्नी जरूर हूं और समाज ने मेरे शरीर के साथ हर प्रकार का खिलवाड़ करने का हक तुम्हें दे रखा है इसका यह मतलब नहीं कि तुम रोज मुझे मारो, रोज मेरी मृत्यु हो। बोलो, मैं कितनी परेशान हो जाती हूं। आज से तुम मेरे पास मत आया करो और हमारा पति–पत्नी का संबंध भी खत्म समझो। दुनिया के लिए हम पति–पत्नी जरूर होंगे पर आपस में मेरे और तुम्हारे बीच दो हाथ का फासला रहेगा। इस तरह तहमीना और जमशेद एक मूक समझौते के तहत पति–पत्नी की भूमिका निभा रहे थे।

तहमीना के जीवन में एक नया मोड़ आता है, जब वह ऑफिस के टाइपरायटर की चोरी के केस में एस.पी. तुषार से मिली है। यह भेट आगे चलकर यौन संबंधों तक विकसित हो जाती है। लेखिका ने तुषार और तहमीना के संबंधों को काफी विस्तार से चित्रित किया है। जमशेद के बाहर चले जाने पर तुषार इस अवसर का लाभ उठाता है। तहमीना को दूर के गावं ले जाता है। यहां के डाक बंगले में वह तहमीना को भोगता है। इस तरह तुषार, सेक्स के लिए तरसी हुई तहमीना का पूरा–पूरा फायदा उठाता है। इन संबंधों का अंत वही होता है जो हमेशा हुआ करता है। तुषार अपनी बदनामी के डर से अपने संबंध तोड़ लेता है।

वह अब तहमीना से मिलना भी छोड़ देता है और उससे हमेशा बचते रहता है। इधर तहमीना उसे पाने के लिए तड़पती रहती है, उसके पीछे पागलों जैसी भागती रहती है। वह सोचती है, यह कैसा दर्द है वह बार–बार अपने को टटोल कर पूछती है, उसे शांति क्यों नही? दिल को किसी पलचौन क्यों नहीं है ? दर्द का फोड़ा हर पल, हर क्षण टीसें देता है, जिंदगी में क्या मिला? शायद कुछ नहीं। वीरानी ही वीरानी है अब जो जिंदगी में ..। सब तरफ धूल ही धूल ... धुंधलापन है चारों और, हर खुशी पत्ते की तरह उड़ती नजर आती है। इस संदर्भ में डॉ. शील प्रभा वर्मा कहती है, अकेला पलाश उपन्यास बदलते सामाजिक संदर्भों को आत्मसात किए हुए है। कृति, नायिका तहमीना को पौरुषहीन पति एवं सुंदर स्वास्थ प्रेमी के त्रिकोण को लेकर लिखी गई है। प्रस्तुत कृति युगानुरूप सामाजिक प्रयत्नों के अनेक प्रसंग एवं तथ्य लिए हेयु है।

तुषार का ट्रांसफर दिल्ली हो जाता है। यहां लेखिका ने उपन्यास के शीषर्क अकेला पलाश के अर्थ को स्पष्ट करते हुए तहमीना के जीवन–सत्य को उजागर किया है, पलाश। लाख सुंदर हो, सुंदर फूल हों, पर उसमें सुगंध नहीं न। उसे जुड़े में सजाया नहीं जा सकता, वह किसी भी गुलदस्ते की शोभा नहीं बन पाता। पलाश सिर्फ अपनी डाल पर लगता है और उसी पर मुरझाकर धरती पर गिर जाता है। वह सिर्फ अपने लिए, अपनी डाल तक ही सीमित रहता है। कितना कड़वा सत्य है, जिसे उसने आज जाना, अभी... इसी क्षण। कुछ दिनों बाद तहमीना अपने आप को संभाल लेती है। आज फिर उसके जीवन में एक और अंधड़ उठा, तुषार का पत्र देखकर, यहां से लेखिका ने उपन्यास को शुरू किया था। अब तहमीना कठोर होकर तुषार को पत्र लिखती है, मेरी दुनिया से दूर चले जाओ। मुझे कुछ याद नहीं, बिल्कुल उस भटके हुए पक्षी की तरह जो अपना घोंसला शाम के अंधरे में भूल जाता है। मैं भी उसी पक्षी की तरह अपना सारा कुछ पिछला भुला चुकी हूं अब उन्है कभी याद दिलाने की चेष्टा मत करना। बस!

इस उपन्यास की ट्रेजेडीज, (त्रासदी) की भरमार है। तहमीना के ऑफिस में काम करनेवाली महिला कर्मचारियों की एक लंबी कतार है जो सेक्स और विवाह की ट्रेजेडी से त्रस्त है। एक कर्मचारी है रजिया जिसका विवाहित विनादे के साथ संबंध है। विनोद दो बच्चों का बाप है, रजिया तहमीना को आश्वासन देती है कि वह इसके बाद विनादे से कभी नहीं मिलेगी। तहमीना रजिया का ट्रांसफर भी दूसरी जगह कर देती है। दूसरी कर्मचारी दुलारीबाई है। यह विधवा स्त्री है, इसको तीन बच्चे रहने के बावजूद वह एक ग्रामसेवक से फंसी हुई रहती है। तहमीना इसे भी समझाकर दूसरे गांव भेजने का प्रबंध करती है। अन्य कर्मचारी में एक विमला है जिसे एक लड़का बम्बई भगा ले गया था और वहां उसे अकेला छोड़कर भाग गया। घर लौटने पर उसे घरवाले रखने के लिए राजी नहीं होते । वह एक आश्रम का सहारा लेती है, यहां भी उसे एक आश्रम से दूसरे आश्रम भेजा जाता है, वह वहां के स्वामियों के वासना का शिकार होती रहती है। अतं में वह एक स्वामी के साथ रहती है जिसे वह अपना पिता बतलाती है। स्वामी के प्रभाव और सिफारिश से उसे यह नौकरी मिलती है। एक दिन उसका भेद खुलता है कि वह स्वामी उसका पिता नहीं आपितु पति है और स्वामी ने उसकी नौकरी को अपनी आय का साधन बना रखा है। गांव की शिक्षिका के पीछे एक मास्टर लगा रहता है, वह बदमाश है शिक्षिका उसके चंगुल में नहीं आती। इसलिए वह उसे मकान खाली करने की धमकी देता रहता है। तहमीना के दफ्तर का बाबू नारी के प्रति एकदम क्रुर और अत्याचारी व्यक्ति है। न जाने कितनी लड़कियों की जिंदगी बर्बाद कर चुका है। एक ठाकुरानी को जब उससे गर्भ रह जाता है तो उसे जहर देकर मार डालता है। उसका सारा सोना–चांदी, रुपया, बर्तन–भांडा उठाकर ले आता है। ठाकुरानी के लड़के को अनाथालय भेज देता है। डॉ. वर्मा तथा डॉ. मिस पाण्डे के अनुचित संबंध रहते हैं। डॉ. खान अस्पताल में नर्सों के साथ व्यभिचार में रत रहता है। एक रात वह एक नर्स के साथ जबर्दस्ती करना चाहता है, वह बाहर आकर उसे सरेआम बेइज्जत कर देती है।

लेखिका ने डॉ. खान के परिवार की पृष्ठभूमि इस तरह बतलायी है, जी हां, उसका बाप मामूली दर्जी था। नंबर वन का बदमाश और तबाज था। अनगिनत औरतें थी उसकी। उसकी औरत कहते है चप्पल लेकर घूमती थी उसके पीछे। बहन बहुत बदनाम थी। उसी बदनामी के पैसे से उसने अपने भाई को पढ़ाया, फिर वह खुद एक हिंदू मर्द के साथ भाग गयी। बाद में उसे भी छोड दिया। फिर दूसरे के साथ भाग गयी। बाद में उसकी छोटी बहन का भी यही हाल हुआ था। इसके सगे बाप ने अपनी बड़ी लड़की, जो पहेली पत्नी से थी, उसे हवस का शिकार बना लिया था। जिससे उसे एक बच्चा भी हुआ, जो बाद में मर गया।

इस उपन्यास में एक कथा विपुल की है। विपुल एक होन हार और बडा मेहनती लड़का है, तहमीना को वह बड़ी अपनी बड़ी बहन मानता है। विपुल और तहमीना के बीच विभिन्न विषयों को लेकर जो लंबे संवाद लेखिका ने लिखे हैं, उन्है देखकर ऐसा लगता है कि वह अपनी बौद्धिक भड़ास यहां निकालना चाहती है। तहमीना एक जगह विपुल से कहती है, औरत की जिंदगी उस पौधे की तरह है जिसे एक जगह से उखाड़कर नई जगह लगाया जाता है। नई जमीन में अपनी जड़े जमाने में उसे उतना ही समय लगेगा न, यदि इसी प्रकार का वातावरण, पानी और पर्याप्त खाद नहीं मिला तो हो सकता है वह नयी जगह लग ही न पाये, और सुख जायेगा। कभी तुमने देखा होगा, हम लोग बड़े शौक से एक जगह से उखाड़ कर पौधा दूसरी जगह देते हैं। पर वह नयी जगह में नहीं लग पाता और सुख जाता है।

इस उपन्यास का एक और महत्वपूर्ण पहलू है, कामकाजी नारी की भारतीय परिवार में स्थिति। तहमीना एक शिक्षित कामकाजी नारी है, वह दोहरी भूमिका निभा रही है। एक तरफ से घर, पति और बच्चे को देखना पड़ता है तो दूसरी तरफ उसे ऑफिस में समय पर पहुंच कर कार्य करना होता है। इस तरह लेखिका ने यह बतलाने की कोशिश की है कि, किस तरह आज कामकाजी नारी दो पाटों में बुरी तरह पीसी जा रही है। इसके अलावा उपन्यास में लेखिका ने समाज में फैली विकृतियां, सरकारी दफ्तरों का भ्रष्टाचार, अस्पतालों की जर्जर स्थिति, नारी का होनेवाला शोषण आदि समस्याओं को अपने उपन्यास में समेटा है। इस संदर्भ में डॉक्टर मथुरेशनन्दन कुलश्रेष्ठ लिखते हैं, नौकरीपेशा महिला के सामने आनेवाली कठिनाइयों की और यह उपन्यास सचेष्ट भाव से ध्यान खिंचता है। वही इसके अतिरिक्त एक और चीज है जो इस कृति को साहित्यिक बनाती है और वह लेखिका का प्रेम–चिंतन और जीवन–चिंतन। यह एकदम अलग बात है कि हम उससे सहमत हो या ना हो परंतु ये दोनों बातें इस उपन्यास में स्थान–स्थान पर अनुभूति के स्तर पर आयी है। पाप–पुण्य, नश्वरता, क्षणिकता, नारी, धर्म, समझदारी, जीवन, तकदीर, दर्द और प्रेम संबंधी काव्यात्मक उक्तियां भी इस उपन्यास को समृद्ध बनाती है।

संदर्भ ग्रंथः

1. हिंदी उपन्यास और यथार्थवाद – त्रिभवुनसिंह, पृ. सं. 1
2. महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ – डॉ. शील प्रभा वर्मा, पृ. सं. 26
3. अकेला पलाश – मेहरुन्निसा परवेज, पृ. सं. 101
4. वही, पृ सं. 83
5. वही, पृ. सं. 219
6. महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक संदर्भ – डॉ. शील प्रभा वर्मा, पृ. सं. 26
7. अकेला पलाश – मेहरुन्निसा परवेज, पृ. सं. 232
8. वही, पृ. सं. 232
9. वही, पृ. सं. 71
10. वही, पृ. सं. 149
11. प्रकार (उपन्यास – अकेला पलाश, वर्ष–16 अंक फरवरी में प्रकाशित) – डॉ. मथुरेशनन्दन कुलश्रेष्ठ, पृ. सं. 10